



राजस्थान में नया टाइगर रज़िर्व

चर्चा में क्यों?

एक विशेषज्ञ समिति ने कुंभलगढ़-टोंडगढ़ रावली अभयारण्य को [बाघ अभयारण्य](#) घोषित करने से पहले तत्काल आवास संरक्षण और शिकार आधार विकास की सलाह दी।

- केंद्र सरकार और [राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण](#) ने अगस्त 2023 में [सैद्धान्तिक मंजूरी](#) दे दी है। समिति जैवविविधता की सुरक्षा के लिये कोर और बफर क्षेत्रों को परभाषित करना जारी रखेगी।

//



बाघ

राॅयल बंगाल टाइगर (Panthera Tigris) भारत का राष्ट्रीय पशु है।

बाघ की उप प्रजातियाँ

- * महाद्वीपीय (पैथेरा टाइग्रिस टाइग्रिस)
- * सुंडा (पैथेरा टाइग्रिस सोंडाइका)

प्राकृतिक अधिवास

उष्णकटिबंधीय वर्षावन,
सदाबहार वन,
समशीतोष्ण वन, मैंग्रोव
दलदल, घास के
मैदान और सवाना



देश जहाँ बाघ पाए जाते हैं

- 13 बाघ रेंज देश जहाँ यह प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं उनमें- भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्याँमार, रूस, चीन, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम शामिल हैं।
- IUCN की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम में बाघ विलुप्त हो गए हैं।

संरक्षण की स्थिति

- IUCN रेड लिस्ट: लुप्तप्राय
- CITES: परिशिष्ट-I
- WPA 1972: अनुसूची-I

खतरे

- आवास विखंडन
- अवैध शिकार
- मानव-वन्यजीव संघर्ष

संरक्षण संबंधी प्रयास

- इंटरनेशनल बिग कैट्स एलायंस (IBCA): बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, चीता, जैगुआर और प्यूमा नामक सात बड़ी बिल्लियों के संरक्षण के लिये (भारत द्वारा शुरू)
- Tx2 अभियान: WWF द्वारा आरंभ किया गया; 2022 तक बाघों की आबादी को दोगुना करने के लक्ष्य को इंगित करते हुए 'टाइगर टाइम्स 2' को संदर्भित करता था
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA): WPA, 1972 के तहत गठित
- प्रोजेक्ट टाइगर: 1973 में लॉन्च किया गया
- बाघों की गणना: प्रत्येक 5 वर्ष में

भारत में बाघ

- भारत में इनकी संख्या सबसे अधिक है
 - वर्ष 2022 तक, भारत में बाघों की संख्या 3167 थी
 - मध्य भारतीय उच्च भूमि और पूर्वी घाट में इनकी सबसे बड़ी आबादी पाई गई है
- टाइगर रिजर्व: भारत में अब 53 टाइगर रिजर्व हैं
 - नवीनतम टाइगर रिजर्व उत्तर प्रदेश का रानीपुर है
 - नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश) सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है जबकि ओरंग (असम) सबसे छोटा (कोर क्षेत्र) है।



प्रमुख बड़ि

- समति की सफारशि:
 - आवास सीमाएँ:
 - वर्तमान क्षेत्र में बाघों की स्थायी आबादी को सहारा देने की क्षमता का अभाव है। रिपोर्ट में प्रस्तावित रिजर्व में और अधिक क्षेत्र जोड़ने का सुझाव दिया गया है।
 - गाँवों का स्थानांतरण:
 - प्रस्तावित रिजर्व क्षेत्र के भीतर वरिल आबादी वाले गाँवों के लिये एक रणनीतिक, स्वैच्छिक पुनर्वास योजना की सफारशि की जाती है, ताकि स्थायी पुनर्वास के माध्यम से अप्रभावित आवासों को सुरक्षित किया जा सके एवं ग्रामीणों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके।
 - आक्रामक प्रजातियों पर नियंत्रण:
 - जंगली शाकाहारी जानवरों के लिये उपयुक्त आवासों को बहाल करने और जैवविविधता को बढ़ावा देने के लिये आक्रामक खरपतवारों

को हटाना एवं देशी, स्वादषिट घासों को लगाना आवश्यक है।

- शिकार आधार विकास:
 - शिकार की उपलब्धता बढ़ाने के लिये 1,000-2,000 **चत्तिदार हरिणों (चीतल)** को स्थानांतरित करने की सफारिश की जाती है, जिससे शिकारियों की आबादी को लाभ होगा।
- अवैध शिकार नरोधक एवं बुनयादी ढाँचा:
 - **अवैध शिकार** वरोधी उपायों, वायरलेस संचार और गश्ती सडकों को मजबूत करना आवश्यक है।
- भौगोलिक क्षेत्र:
 - कुंभलगढ टाइगर रजिस्व राजस्थान के **राजसमंद, उदयपुर, पाली, अजमेर और सरिही जिलों में लगभग 1,397 वर्ग किलोमीटर में फैला होगा।**

चत्तिदार हरिण (चीतल)



- चीतल, जसि **चत्तिदार हरिण** या **एक्ससि डयिर** के नाम से भी जाना जाता है, एक सुंदर और आकर्षक शाकाहारी प्राणी है जो **भारत और श्रीलंका** के घास के मैदानों और जंगलों का मूल नविसी है।
- वे खुले घास के मैदान, सवाना और हल्के वन क्षेत्रों को पसंद करते हैं।
 - **IUCN रेड लसिट : लीस्ट कंसरन (LC)**
 - **वनयजीव संरक्षण अधनियिम, 1972 : अनुसूची II**